



आर्योदय ARYODAYE



LET US
LOOK AT
EVERYONE
WITH A
FRIENDLY
EYE

- VEDA

Aryodaye Weekly No. 273

ARYA SABHA MAURITIUS

29th July to 8th Aug. 2013

Shradhā (foi, dévotion, ferveur, piété)

Om ! Shradhāgniha samidhyatē shradhayā huyatē haviha.
Shradhānga bhagasya murdhani vachassā vēdayāmassi.

Rig. Vēda, 10.151.1

Glossaire / Shabdārtha :

Shradhayā : **Shrat** – veut dire la vérité et la foi. L'adoption de la vérité et de la foi dans notre esprit, âme et conscience veut dire 'shradhā', **Agniha** – le feu sacré du yajna qu'on allume, **Samidhyatē** : Les oblations que l'on offre au cours du yajna, **Shradhayā** – avec beaucoup de ferveur – (dans ce contexte), **Havi** : Les oblations voire les offrandes de ghee, samāgri, samidha, etc. que l'on consacre aux flammes du feu sacré, **Huyatē** – que l'on offre, **Shradhām** – avec dévotion, **Bhugasya** : Par des actions courageuses voire audacieuses et bénéfiques à tout le monde, **Murdhani** – en temps et lieu, **Vachassā** – par la parole, **Vēdayāmassi** – nous évoquons (Nous faisons état de).

Interprétation / Bhāwārtha

C'est avec beaucoup de ferveur et de dévotion dans notre esprit et dans notre âme et conscience que nous devons entamer le yajna, allumer et alimenter le feu sacré par les oblations, tout en invoquant la bénédiction de L'Être suprême par la lecture parfaite des versets (mantras) des Védas.

Toute action entreprise avec 'Shradhā' c'est-à-dire avec foi et piété, est toujours couronnée de succès. 'Shradhā' occupe une place prépondérante dans notre vie.

L'apprentissage et la lecture des Védas, les sermons des sages et le côtoiement des élites, nous sont très bénéfiques et engendrent 'Shradhā' en nous.

La mise en pratique de la vérité dans notre vie, voire dans notre pensée, parole et action, est sans aucun doute une partie intégrante du 'Shradhā'.

Un homme sans 'Shradhā' est malheureux et terne, c'est-à-dire, il est quelqu'un qui est dépourvu de piété et qui manque de savoir-vivre.

N. Ghoorah

वेद-स्वाध्याय

वरदा वेद-माता

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

ओ३म् ।। स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।

आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् ।

महयं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।।

अथर्ववेद १९/७१/१

उपर्युक्त अथर्ववेदीय मन्त्र के भावार्थ में किसी कवि ने लिखा –

स्तुति करते हम वेद-ज्ञान की,
जो माता है प्रेरक-पालक,
पावन करती मनुज-मात्र को ।
आयु, बल, सन्तति, पशु, कीर्ति,
धन, मेधा, विद्या का दान,
सब कुछ देकर हमें दिया है,
मोक्ष मार्ग का पावन ज्ञान ।

प्रस्तुत मन्त्र में वेद को 'वरदा वेद माता' कहा गया। हमारे दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं, – रामायण और महाभारत। महाभारत के हृदय से 'श्रीमद्भागवत गीता' प्रसूत हुई। ये तीनों ग्रन्थ सभी के कण्ठ-हार हैं, परन्तु इनमें से किसी को भी 'माता' शब्द से सम्बोधित नहीं किया गया और ना ही विश्व के किसी मत के ग्रन्थ को माता कहा गया है। यह गौरव केवल वेद को प्राप्त है।

माता की ममता कितनी स्नेहमयी है। यह नाता अति पावन है। शिशु जब माँ के गर्भ से बाहर आता है, तब रुदन करता है। उसकी आत्मा परमात्मा से पूछ उठती है कि मुझ अशक्त की देख-भाल कौन करेगा? परमात्मा उत्तर देता है कि जिस जननी ने तुम्हें उत्पन्न किया है, वही तुम्हें दूध पिलायेगी, तुम्हारी गन्दगी साफ़ करेगी, तुम्हारे नंगेपन को ढाँकने के लिए वस्त्र पहनायेगी। वही गुरु बनकर तुम्हें प्रथम ज्ञान देगी और तुम्हारी रक्षा करेगी। जिस तरह माँ नवजात शिशु की रक्षा किया करती है, ठीक उसी

प्रकार आदि सृष्टि में जब मानव धरती पर आये तब उनकी रक्षा के लिए आदि गुरु परमेश्वर ने उन्हें वेद-रूपी माता दी। इस माता ने ही अपने ज्ञान की कोख से उन्हें दूसरा जन्म देकर द्विज बनाया, पावनता दी। ज्ञान लोक-परलोक दोनों का निर्माण करता है। यदि अपरा विद्या हमें भौतिक उन्नति का मार्ग दर्शाती है तो परा विद्या आध्यात्मिक ऊँचाई की ओर ले जाती है। गंगोत्तरी से निसृत गंगा का पानी सभी नदियों के पानी से अधिक पवित्र माना जाता है, परन्तु ज्ञान-सा निर्मल और कोई जल नहीं। जिसने भी वेद से नाता जोड़ा, उसे जीवन में कुन्दन बनने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

अज्ञान मनुष्य के लिए अभिशाप है, अज्ञानांधकार में भटकने वाला मानव दानव बन जाता है। वेद-ज्ञान का उपासक देव बन जाता है। प्रस्तुत मन्त्र की दूसरी कंडिका में कहा गया – आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। कीर्ति उसी को मिलती है, जो अपनी आयु और प्राणों को दूसरों के उपकार में व्यतीत करता है।

पुराणों में इन्द्र की बड़ी महिमा गाई गई है। कहा जाता है कि इन्द्र देवलोक के वासी हैं, देवों के राजा हैं। उनके पास सुख के सभी साधन विद्यमान हैं। वेद-ज्ञान व्यक्ति को इन्द्र बना देता है। उसे दीर्घायु, उत्तम प्राण, प्रजा, द्रव्य और ब्रह्म-तेज प्रदान करके सब कुछ दे देता है।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

अटूट प्रेम

प्रेम वह मनोवृत्ति है, जो किसी प्राणी के हृदय को प्रभावित करके उससे सम्बन्ध जोड़ लेती है। प्रेम से हर प्रकार की दुश्मनी दूर होती है और रिश्तेदारी बढ़ती है। सच्चे प्रेम में वह शक्ति होती है, जो शत्रु को भी मित्र बना देती है। प्रेम-पाश में बन्धकर जीवधारी सुखी एवं आनंदित रहता है।

प्रेम-बल से एक परिवार सुदृढ़, सबल और समृद्धशाली होता है। एक दूसरे के आपसी प्रेम और सहयोग से सारा परिवार समृद्धशाली और सुखी होता है। परिवार के हर एक सदस्य के सुख-दुख में निरंतर सहायक बनकर उसके हृदय को द्रवीभूत करता है। प्रेम-भाव बढ़ने से परिवार की उन्नति होती है, और नफ़रत जताने से अवनति। इसीलिए एक अटल रिश्ता स्थापित करने के लिए घर-परिवार में प्यार का वातावरण होना अनिवार्य है।

अटूट-प्रेम से सारे परिवार में सुदृढ़ सम्बन्ध जुड़ा रहता है। दादा-दादी, माता-पिता और भाई-बहनों में तो खून का रिश्ता होता है। उनमें एक दूसरे के प्रति जीवन निष्ठावर करने की प्रेम-भावना जागरित होती रहती है। जब कभी भी अपना रक्त देने की ज़रूरत हो जाती है तो किसी की जान बचाने के लिए परिवार का प्रत्येक सदस्य तत्पर रहता है। वास्तव में तो एक आदर्श परिवार की नींव प्रेम के सहारे कायम रहती है। प्यार, मुहब्बत ही तो जिन्दगी है। प्यार नहीं तो जीवन नहीं। प्यार के बिना जीना भी क्या जीना। प्यार घटने से पारिवारिक वातावरण दूषित हो जाता है और प्रेम बढ़ाने से पवित्र।

आज प्रेम के अभाव से अनेक रिश्तेदारों में विच्छेद उत्पन्न हो रहा है। मतभेद, ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण फूट पैदा होने लगी है। कितने आलीशान महल तो नज़र आ रहे हैं, परन्तु उनमें रहने वाले परिवारों में एकता, प्रेम, शान्ति और आत्मीयता नहीं। आज के अधिक इन्सान मनोविकारों के दलदल में फँसते जा रहे हैं। वे स्वार्थांध बनकर धन-दौलत कमाने की पीछे चिन्ता एवं तनावपूर्ण जिन्दगी गुज़ार रहे हैं। आपसी प्रेम और खून का वास्ता भी भूल रहे हैं, इसीलिए प्रेम-बन्धन टूटने लगा है। प्रेमपाश के अभाव में एक घर में रहकर भी परिवार में एकता नहीं और शत्रुता बढ़ती नज़र आ रही है।

आज सच्चे दिल से प्रेम करने वालों की कमी है और दिखावा प्रेम करने वाले अधिक। मुँह में राम बगल में छुरी का बुरा ज़माना है। जो व्याक्ति प्रेम के महत्व को समझ पाए, वे ही लोग प्रेम-बन्धन में पड़कर प्रसन्नता पूर्वक जी रहे हैं। वे मिलकर खुशी से गदगद हो जाते हैं, क्योंकि प्रेम एक ऐसा जादू है, जो आदमी को मोह लेता है। जो ढाई अक्षर 'प्रेम' की महत्ता को जानता है, वही चतुर है।

हर साल की तरह इस साल भी भाई-बहनों का अति महान् पर्व 'रक्षा-बन्धन' आ गया है। दोनों को अपना अटूट प्रेम दिखाने का सुनहरा समय है। सारे भेदभाव, विद्रोह आदि कुटिल भावनाएँ दूर भगाकर जीवन भर प्रेममय नाता बनाए रखने का अवसर है। एक दूसरे के दुख-सुख और हर संकटकालीन स्थिति में सहयोग देते रहने का वचन निभाना है। इस शुभ एवं मंगलमय अवसर पर प्रतीकात्मक रूप से मिष्टान्न देकर तथा उपहार प्रदान करके हर प्रकार की आपसी कड़वाहट दूर करने का वादा करना है।

हमारी यही कामना है कि सभी भाई-बहनों का प्रेम जीवन भर स्थापित रहे। सभी भाई-बहनों के लिए रक्षा-बन्धन मंगलमय।

बालचन्द तानाकूर

गतांक से आगे

सत्यार्थप्रकाश जयन्ती

पं० मुखलाल लोकमान

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास के द्वारा हमें यह भी दर्शाया है कि किस उम्र में कन्या और वर का विवाह होना चाहिए। उन्होंने इस पर भी जोर दिया है कि बाल विवाह नहीं करना है। बाल विवाह से अनेक प्रकार की हानियाँ होती हैं – जैसे वर-वधू के स्वास्थ्य का नाश, अपरिपक्व शरीर वाले लड़के-लड़कियाँ जब अल्पायु में विवाह कर शारीरिक सम्बंध स्थापित करते हैं तब उनके शरीर निर्बल हो जाते हैं। उनके चेहरे, बुढ़ापे की झुर्रियों से मुरझा जाते हैं। उनका स्वास्थ्य एकदम बिगड़ जाता है।

बाल्यावस्था में लड़के-लड़कियों का शारीरिक विकास पूर्ण रूप से नहीं होता है। दस बारह साल के बच्चे, बच्चे ही होते हैं। उनके मानसिक विकास भी नहीं हो पाते हैं ऐसे में उन्हें विवाह के बंधन में झोंकना खतरे से बाहर नहीं है।

सन्तान उत्पन्न करने का सारा भार स्त्री पर होता है यदि उनका गर्भाशय पूर्णतया विकसित नहीं हुआ हों तो बच्चा कैसे पैदा कर सकेगी। इसी कारण प्रसव को सहन न कर सकने पर अधिकांश स्त्रियों की असमय मृत्यु हो जाती है। जैसे बाल-विवाह के परिणाम स्वरूप स्त्रियों की मृत्यु अल्पायु में हो जाती है वैसे ही बाल-विवाह के परिणाम स्वरूप अति विषयभोग के कारण पुरुष की आयु क्षीण होती और शरीर निर्बल हो जाता है। रोग प्रहार करता है और कम आयु में मृत्यु हो जाने से – स्त्रियाँ विधवा हो जाती हैं।

सारांश में हम कह सकते हैं कि जब बच्चे का बच्चा हो जाता है तो वे बच्चे माँ-बाप के लिए एक अभिशाप बन जाते हैं। क्या ये छोटी उम्र के माँ-बाप अपनी संतानों की देखभाल करने योग्य रहेंगे? इनका चौका-चूल्हा कैसे चलेगा? कौन चलाएगा? क्या ये बाल माँ-बाप अपने बच्चों को रोटी, कपड़ा, मकान, पुस्तक, शिक्षा प्रदान कर सकेंगे। नहीं! 'कदापि' नहीं! स्वामी जी ने इसकी कड़ी आलोचना की है।

महर्षि जी ने सत्यार्थप्रकाश में

पुरुष को कम-से-कम २५ और कन्या को कम से कम १६-१८ वर्ष के होने पर विवाह करने का संदेश दिया है। महर्षि दयानन्द ने विवाह के लक्षण पर भी प्रकाश डाला है। मनु जी महाराज की मनुस्मृति के अनुसार आठ प्रकार के विवाह का वर्णन किया है। ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य, आसुर, गन्धर्व, राक्षस और पैशाच।

इनमें से विवाहों की यह व्यवस्था कि वर और कन्या यथावत् ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्वान् धार्मिक और सुशील हों। इनका परस्पर प्रसन्नता से विवाह होना - 'ब्राह्म' कहाता है। विस्तृत यज्ञ करने में ऋत्विक् कर्म करते हुए जमाता को अलंकार युक्त कन्या का 'दैव'। वर से कुछ लेकर विवाह होना 'आर्ष' और दोनों का विवाह धर्म की वृद्धि के अर्थ होना 'प्रजापत्य' कहलाता है। ये चार प्रकार के विवाह सर्वोत्कृष्ट, दैव और प्राजापत्य मध्यम और आर्ष आसुर कहलाते हैं। और अन्य चार निकृष्ट, राक्षस, अधर्म और पैशाच कहलाते हैं जो सर्वथा त्याज्य है। सनातन वैदिक धर्म के अनुसार मानव जीवन को स्वस्थ, सुखी और उत्तम बनाने के लिए हमारे धर्म-शास्त्रों में चार पुरुषार्थों का विधान है – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। हमारा सम्पूर्ण जीवन इन चार स्तम्भों पर आश्रित है। यदि इनमें से 'काम' को निकाल देंगे तो मानव जीवन, एकदम नीरस और अधूरा बन जाएगा। गृहस्थ-आश्रम 'काम' ही पर निर्भर है। काम ही से इनकी एषणाएँ पूर्ण होती हैं। 'पुत्रेष्णा' – वित्तेशणा और लोकेशणा। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के बाद ही ये एषणाएँ पूरी की जा सकती हैं। जिस दम्पति में प्यार, एक दूसरे के प्रति विश्वास हों तो वह दम्पति सुखी बन सकता है। बाल-बच्चों के सुख को प्राप्त कर सकता है। वह अपने जीवन को विकसित करते हुए मुक्ति को प्राप्त कर सकता है।

महर्षि दयानन्द जी के इन उत्कृष्ट विचारों को यदि हम अपने जीवन में उतारेंगे और उनके बतलाए हुए सुपथ पर चलेंगे तो अवश्यमेव हमारा वैवाहिक जीवन सुखी बनेगा।

ओ३म् ।। स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् ।
महयं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।।

अथर्ववेद १९/७१/१

पृष्ठ १ का शेष भाग

वेदों में मन्त्र हैं। मन्त्र का सरल अर्थ है विचार। उत्तम विचार से ही सुख की प्राप्ति होती है। अपनी आयु और प्राणों की रक्षा श्रेष्ठ विचार वाले ही कर सकते हैं। प्रकृष्ट सन्तान को 'प्रजा' कहते हैं। जिस माता-पिता के पास सदज्ञान होता है, वही अपनी सन्तानों को 'प्रजा' बना पाते हैं। कीर्ति की आधारशिला सुकृति है। वेद सुकर्म का उपदेश देता है। मनुष्य ने पशु-पालन और कृषि-कार्य करके द्रव्य से अपनी तिजोरी भर दी। धन-सम्पदा की वृद्धि का पाठ भी वेद से ही सीखा। जिसने भी सच्चे मन से वेदों की स्तुति की, वह ब्रह्म-तेज का स्वामी बन गया। अन्ततः वेद-ज्ञान से मण्डित होकर वेदोपासक ब्रह्मलोक का अधिकारी बन गया।

वेद-मन्त्रों में सत्यविद्या और पदार्थविद्या बीज-रूप में है। जिस तरह एक छोटे बीज के अन्दर वट वृक्ष उत्पन्न करने की शक्ति निहित होती है, उसी प्रकार वेद के एक-एक मन्त्र में अनन्त ज्ञान समाया हुआ है। आवश्यकता इस बात की है कि कोई मन्त्रद्रष्टा बने और उस ज्ञान का उद्घाटन करे। जिसने भी वेद-मन्त्रों के रहस्य को समझा, उसने ऋषि अथवा वैज्ञानिक बनकर अपने आविष्कार के माध्यम से जन-कल्याण का कार्य करके अमरता प्राप्त कर ली।

मनु के अनुसार वही द्विज है, जो वेदाध्ययन को अपना कर्तव्य समझता है। ऋषिराज दयानन्द ने तो वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म घोषित कर दिया।

श्रद्धांजलि सभा

हम सभी आर्य परिवार जब भी किसी एक सपूत को खो देते हैं तब हमें बड़ा ही दुख होता है। खेद की बात है कि आर्य सभा ने गत मास में १५ दिनों के अन्दर दो आर्य सपूत खो दिए। गत ३० जून को हमारे कर्मठ और अनुभवी समाज-सेवी श्री राजेन्द्रचन्द मोहित जी का देहान्त हो गया और १३ जुलाई को गयासिंह आश्रम के अनन्य सेवक तथा आश्रितों के हितैषी चाचा देवऋषि बुलेल जी हम से बिछड़ गए। इन दोनों निस्वार्थ आर्य सेवकों का निधन होने से आर्य समाज के सभी सदस्य शोकातुर हुए।

आर्य सभा के तत्वावधान में समस्त शाखा समाजों एवं मोहित और बुलेल परिवारों के पूरे सहयोग से गत शनिवार २० जुलाई को डेढ़ बजे आर्य भवन में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया था। उन दो आर्य सेवकों की स्मृति में जो कार्यक्रम आयोजित किया गया था, उसमें सम्मिलित होने के लिए भारी संख्या में आर्य बन्धु पधारे हुए थे।

श्रद्धांजलि सभा में भाग लेकर बुलेल और मोहित परिवार को अपनी

सहानुभूति प्रकट करने के लिए आचार्य आर्य नरेश जी, भूतपूर्व राष्ट्रपति महामहिम कसाम उतीम जी, मन्त्री शीला बापू जी, मन्त्री माननीय सुरेन्द्र दयाल जी, विरोधी दल के नेता माननीय आलान गन्नू जी, पी.पी.एस माननीय प्रतिभा भोला जी, माननीय स्टीव ओबिगाडू जी तथा माननीय रेजा उतीम जी उपस्थित थे।

उस सभा में अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधि, आर्य सभा के अधिकारी, पुरोहित-पुरोहिताएँ, दोनों संतप्त परिवारों के सदस्य और सखा सम्बन्धी अपनी हमदर्दी प्रकट करने के लिए पधारे थे।

आर्य सभा उन सभी सहयोगियों के प्रति आभारी है, जिन्होंने उस श्रद्धांजलि सभा में अपना पूरा सहयोग दिया।

परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करें कि उन दो स्वर्गीय आर्य सपूतों की आत्मा को अपनी सुकृति के अनुसार सद्गति प्राप्त हो।

बालचन्द तानाकूर, प्रधान
आर्य सभा मॉरीशस

FLACQ ARYA JILA SAMITI

SHRAVANI UPAKARMA MAHOTSAV CELEBRATIONS - 23rd July to 20th August 2013

S/N	Day/Date	Time	Venue	Responsible Pandits
1.	Thurs. 1st Aug	4.00 p.m	C.de Masque Pave, P. Cabanne	Pt.S.Ramkalawon/Pt. Toolooa
2.	Fri. 2nd Aug	3.00 p.m.	Caroline AS/ AMS 47/445	Pt. Sooknauth / Pt. Nilkunt
3.	Fri. 2nd Aug	4.00 p.m.	Pont Blanc AS/ AMS 361/212	Pt. G. Toolooa /Pta. S. Dabeeah
4.	Sun. 4th Aug	7.00 a.m.	Lallmatie AMS 277	Pta. Dabeeah
5.	Sun. 4th Aug	8.00 a.m.	Olivia AS	Pt. Ramkalawon /Pt. Koonja
6.	Sun. 4th Aug	8.00 a.m.	Brisee Verdier AMS 395	Pta. S.Domun
7.	Sun. 4th Aug	9.00 a.m.	Pont Praslin AS/AMS 21 / 455	Pt. N. Doomun/Pt. G. Toolooa
8.	Sun. 4th Aug	2.00 p.m.	Camp Raltia AMS 275	Pta. L. Koonja
9.	Tues. 6th Aug	5.00 p.m.	Plaine des Gersgny AS 112	Pt. G. Toolooa
10.	Wed. 7th Aug	3.30 p.m.	Camp Ithier AS/ AMS 39/ 358	Pt. S. Sooknauth /Pta Sundhoo
11.	Wed. 7th Aug	4.00 p.m.	La Porte, Providence A.S 286	Pt. Ramkalawon /Pt.G.Toolooa
12.	Wed. 7th Aug	5.00 p.m.	Grande Retraite AS 111	Pt. G. Toolooa
13.	Thurs. 8th Aug	3.30 p.m.	Bonne Mere AS/ AMS 29/440	Pt. S.Ramkalawon/Pta. P. Darumdar
14.	Fri. 9th Aug	2.00 p.m.	Petit Retraite AMS 323	Pta. Dabeeah
15.	Fri. 8th Aug	3.00 p.m.	Deux Freres AS/AMS 19/399	Pt. Booluck /Pta. P. Durumdur
16.	Fri. 9th Aug	3.30 p.m.	Grande Retraite AMS 404	Pta. Dabeeah
17.	Fri. 8th Aug	4.00 p.m.	Trou Deau Douce	
			7 Chemin AS 360/454	Pt. Ramsurrun
18.	Fri. 9th Aug	4.00 p.m.	P. de Flacq La Gare AS/AMS 349	Pt.Ramkalawon / Pta. Koonja
19.	Sat. 10th Aug	1.00 p.m.	Bel Air AMS 356	Pta. Dabeeah
20.	Sat. 10th Aug	4.00 p.m.	Trou Deau Douce	
			7 Chemin AS/ AMS 360/454	Pt. P. Ramsurrun
21.	Sun. 11th Aug	8.30 a.m.	Trou Deau Douce	
			7 Chemin AS/ AMS 360/455	Pt. P. Ramsurrun
22.	Sun. 11th Aug	9.00 a.m.	Quatre Cocos AMS 451	Pta Durumdur / Pt. S. Ramkalawon
23.	Sun. 11th Aug	3.00 p.m.	Quatre Cocos AMS 451	Pta Durumdur/ Pt. J. Pokhun
24.	Sun. 11th Aug	9.00 a.m.	Lallmatie AMS 263	Pta. S. Domun
25.	Wed. 14th Aug	4.00 p.m.	P. de Flacq Camp Accasia AS/ AMS 244/416	Pt. Ramkhalawon/ Pt. L. Koonja
26.	Thurs. 15th Aug	4.00 p.m	Bon Accueil AS/ AMS 33/264	Pt. N. Domun / Pta. S. Domun
27.	Thurs. 15th Aug	4.00 p.m	St Remy AS 119	Pt. G. Toolooa
28.	Thurs. 15th Aug	4.00 p.m	C. de Masque Pave AS/AMS 103/331	Pt. D. Ramsurrun / Pta. P. Duramdur
29.	Fri. 16th Aug	4.00 p.m	Bon Accueil AS 119	Pt. N. Domun
30.	Fri. 16th Aug	4.00 p.m	Laventre AS/ AMS 118/224	Pt. Ramkhalawon/ Pta.P.Bhoojawon
31.	Fri. 16th Aug	4.00 p.m	T. Montagne AS 109	Pt. D Ramsurrun
32.	Fri. 16th Aug	4.00 p.m	T. D. Douce As.AMS 222/435	Pt. S. Sooknath/ Pta. Sundhoo

..... to be continued

O M

BLACK RIVER ARYA ZILA PARISHAD - SHRAWANI YAJ PROGRAMME - 2013

S/N	DAY	DATE	NAME OF SAMAJ /MEMBERS	ADDRESS	TIME	NAME OF PUROHIT
9.	Thurs	01/08	Damiantee Khedoo EDC Rd,	Chamouny	3.30 pm	A. Mungroo
10.	Fri	02/08	Dev Kumar Phoolchand	C. Charlot,C.Grenier	4.00 pm	Pt. H.Jhupsee
11.	Sat	03/08	Petite Riviere A.M.S	R. Rd, Petite Riviere	4.00 pm	Pt. H.Jhupsee
12.	Sun	04/08	Rajwantee Thakur	EDC, B. Ombre	10.00 am	Pt. H.Jhupsee
13.	Sun	04/08	Atmah Heereea	Jumbo Rd, C. Grenier	1.00 pm	D.Soomaroo
14.	Tues	05/08	Devika Pahaloo	C. Charlot, C. Grenier	3.30 pm	Pt. H.Jhupsee
15.	Wed	07/08	Bel Ombre Arya Samaj	EDC, Bel Ombre	3.30 pm	Ach. Beetulah
16.	Fri	09/08	Vishnu Potanah	EDC, Bel Ombre	4.00 pm	Pt. H.Jhupsee
17.	Sat	10/08	Petite Riviere A.S	Royal Rd, Petite Riviere	3.30 pm	Ach. Beetulah
18.	Sun	11/08	Baie du Cap Arya Samaj	Royal Rd, Baie du Cap	2.00 pm	Pt. H.Jhupsee
19.	Mon	12/08	Rajen Ramjee,M.S.K	Dumor Lane, Chamouny	3.30 pm	Ach. Beetulah
20.	Tues	13/08	Le Morne Arya Samaj	Royal Rd, Le Morne	3.00 pm	Pt. H.Jhupsee
21.	Wed	14/08	Devika Bonou	Royal Rd, Le Morne	9.00 am	Pt. H.Jhupsee
22.	Thurs	15/08	Radha Ananda	Royal Rd, Le Morne	2.00 pm	Ach. Beetulah
23.	Fri	16/08	Riviere des Galets A.S.	Riv. des Galets H.School	4.00 pm	J. Muttra
24.	Sat	17/08	Beeharry Family	Royal Rd, Chamarel	1.00 pm	Ach. Beetulah
25.	Sun	18/08	Purnahutee - Bambous Arya Samaj	Royal Rd, Bambous - Ramu Residence	3.30 pm	Ach. Beetoolah
Head Priest			President	Secretary	Treasurer	Co-ordinator
Ach. Beetulah Shastri			Rohit Mussai	Radha Ananda	Atmah Heeriah	R. Prasad Ramjee

युवा-शक्ति

युवावर्ग हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र के मज़बूत स्तम्भ माना जाता है। जिस प्रकार एक इमारत की मज़बूती उसके सुदृढ़ खम्बों पर आधारित होती है, उसी प्रकार हमारी पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दृढ़ता हमारे युवक-युवतियों की शक्ति पर निर्भर होती है। शक्तिशाली जवानों के आधार पर हमारा भविष्य उज्ज्वल होता है। शक्तिहीन युवकों से कोई आशा नहीं की जा सकती है।

एक बलवान ब्रह्मचारी अपने शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक तथा आत्मिक बल द्वारा अद्भुत कार्य कर सकता है। अपने बल का सदुपयोग करके अपने परिवार और समाज के सदस्यों के साथ-साथ देश के हर एक नागरिक का भला कर सकता है। इसीलिए कहा जाता है कि एक कर्मनिष्ठ युवक अपने और दूसरों का भविष्य बना सकता है जब कि एक निकम्मा जवान अपने और अन्यो का भावी जीवन बिगाड़ देता है।

युवावस्था तो एक अवस्था होती है। उस अवस्था में हम अगर अपने युवकों में सद्गुणों के बीज रोपेंगे तो वे हमें अच्छे और लाभदायक फल प्रदान करेंगे। हम अगर जवानों में अवगुणों के बीज पनपने देंगे तो वे अपने दुष्कर्मों एवं दुर्व्यवहारों से हानि पहुँचाते रहेंगे। जिनके कुकर्मों से न परिवार सुखी रह सकेगा, न समाज।

ब्रह्मचर्य आश्रम हमारे जीवन का बड़ा ही महत्वपूर्ण आश्रम है। एक अच्छे मानव का निर्माण इसी आश्रम में होता है। ब्रह्मचर्य-धर्म का पूरा पालन करने वाले ब्रह्मचारी जब सत्य ज्ञान, सद्बिचार और सुकर्म द्वारा जीने की कला सीख लेते हैं तो वे सुधारवादी बनकर हितकारी होते हैं। सौभाग्य से अगर उन्हें सज्जनों की संगत करने का भाग्य मिल जाता है तो वे अपने सुयोग्य सखा-सम्बन्धियों के आचरणों तथा अनुभव का लाभ उठाकर एक श्रेष्ठ गृहस्थी बन सकते हैं, समाज के सच्चे सिपाही हो सकते हैं और देश-भक्ति में अपना जीवन समर्पित कर देते हैं।

एक श्रेष्ठ युवक या युवती के निर्माण में माता-पिता, रिश्तेदारों और शिक्षकों का बड़ा ही योगदान रहता है। सौभाग्य वश यदि एक बालक को सज्जन, चतुर, परिश्रमी, संयमी और धार्मिक माता-पिता की शरण में पलने का अवसर मिले तो वह बच्चा जवान होकर उत्तम युवक बन सकता है। इसी प्रकार उसे विद्यालय में एक आदर्श विद्यादानी गुरु से ज्ञान ग्रहण करने का भाग्य मिले तो वह विद्वान हो सकता है। माता-पिता, सखा-सम्बन्धी और गुरुजन ही बच्चों के निर्माता होते हैं।

आधुनिक युग में विद्या का बड़ा महत्व है। विद्याहीन व्यक्ति को सुखी जीवन पाना बड़ा कठिन होता है। अतः समस्त अभिभावकों, गुरुजनों और समाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे हमारे युवक-युवतियों को सत्य-विद्या प्रदान करें। उन्हें भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें। विज्ञान-युग में जीने वाले जवानों को नवीन विज्ञान और तकनीकी साधनों की जानकारी प्राप्त कराकर जमाने के साथ सुखी जीवन व्यतीत करने का मार्ग दिखाएँ, तभी हमारे शक्तिशाली युवक अपने अनुभव, ज्ञान और योग्यता का प्रयोग करने में सफल होंगे।

राष्ट्रीय आर्य-युवा-दिवस के उपलक्ष्य में हम आर्य सभा की ओर से यह माँग करते हैं कि हमारे सभी युवक-युवतियाँ सांसारिक सुख भोगी बनकर वेदों के पठन-पाठन, धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन

तथा सामाजिक गतिविधियों में संलग्न हों। कुसंग से हटकर सत्संग में भाग लें। सादा जीवन और उच्च विचारों के साथ जीने की आदत डालें। आप का सम्पूर्ण जीवन बड़ों के आशीर्वाद से मंगलमय होगा।

अपनी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक शक्ति का विकास सत्य कर्मों और सद्व्यवहारों के साथ करना श्रेष्ठ ब्रह्मचारी का धर्म होता है। इस धर्म का पालन करना युवावर्ग का कर्तव्य है।

बालचन्द तानाकूर

तर्ज : का लगाना भूल गया

विष्णुदेव बिसेसर

श्रावण का महीना आ ही गया

वेद पढ़ना-पढ़ाना हो ही गया

यज्ञ की आदत ऐसी पड़ी

सत्संग बिना हमें रहा न गया

श्रावण का महीना

बारह मास बीत गए

तब जाकर श्रावण आया

रिमझिम-रिमझिम अमृत बरसे

हर्ष ही छा गया मन में

वेद मन्त्र याद करो

जन्मों से पाप मिट गया

श्रावण का महीना

ओ३म् का झण्डा लहराये जा

गर्व से आर्य कहलाये जा

वैदिक यज्ञ श्रेष्ठ धर्म है

युग मानव का येही कर्म है

ऋषि मुनि का कहना सुनो

परीक्षा का वक्त आ ही गया

श्रावण का महीना

झूठी प्रशंसा काम न आये

सब रह जायेंगे यहीं प्यारे

सत्यमेव ही जयते

जीत उसी की है होती

ईश्वर का पुण्य करते रहो

समय तू न पा ही गया

श्रावण का महीना

A to Z of Self-Improvement

- A** Actions determine the future. Right actions build bright future.
B Birth means arrival with naked body and karmic destiny.
C Control your senses to stabilise themind.
D Death means departure without body, relatives and bank balance.
E Empty the mind cup. Fill it with divine thoughts.
F Forgive the sinners for they do not know what they do.
G God is everywhere. He is in you. You are a moving temple.
H Home is your heavenly abode.
I Inward journey is for divine realisation.
J Join the band of wise sages for wisdom.
K Know thyself. Keep smiling.
L Love knows no bounds. Love is an ocean not waves.
M Mantra japa unites the individual soul with the Spirit.
N Negative feelings should be tamed and harnessed.
O Open your mind window and let vital knowledge come from all religions.
P Play intelligently your man or woman role in the drama of life.
Q Question yourself. Who am I? Where have I to go?
R Refill your life with light, love, truth and beauty.
S Sages, scriptures and selfless service are the gateway to divinity.
T Tread the spiritual path.
U Unite the hearts to unite with God.
V Violence and vengeance produce victims only.
W Will power is your weapon to win in life.
X Xcel through humility, integrity, nobility, divinity and unity.
Y Yoga Kriya finally leads you to enlightenment.
Z Zen-Avesta by Zoroaster is as divinely inspired as the Vedas.

Dipnarain Beegun

गतांक से आगे

ऋषि दयानन्द की वेदाधारित समग्र क्रान्ति

सामाजिक क्रान्ति

डॉ० भवानीलाल भारतीय

ऋषि दयानन्द की सामाजिक क्रान्ति

दयानन्द प्रवर्तित राष्ट्र क्रान्ति - स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रोत्थान का मार्ग सुझाया और बताया कि वेदोपदिष्ट सप्त सूत्रों के सम्यक् धारण के द्वारा हम अपने राष्ट्र का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। अथर्ववेद के भूमिसूक्त (१२/९) का प्रथम मंत्र पृथ्वी के आधारभूत जिन तत्वों को उल्लिखित करता है उनके द्वारा किसी भी राष्ट्र को उन्नति के पथ पर चलाया जा सकता है। दयानन्द के क्रान्तिकारी चिन्तन की यह विशेषता रही है कि वे भारत के निवासी अपने सहनागरिकों को पदे-पदे चेताते रहे और उन्हें कहते रहे कि जिस धरती के द्वारा प्रदत्त अन्न और जल से उनका शरीर पोषित और पुष्ट हुआ है उस मातृभूमि के प्रति उनका क्या दायित्व और कर्तव्य है? दयानन्द की यह राष्ट्र की आराधना प्राणवान तथा प्रेरणादायिनी सिद्ध हुई। भारतवासियों ने दयानन्द द्वारा प्रदत्त स्वराज्य के सन्देश को सुना और तदनुसार संघर्ष कर स्वाधीनता प्राप्त की। दयानन्द के स्वराज्य चिन्तन की यह विशेषता थी कि उन्होंने देशवासियों को न केवल पराधीनता के अभिशापों से परिचित कराकर उनसे मुक्त होने के लिए कहा, अपितु चेतावनी भरे स्वर में सावधान किया कि अनेक कठिनाइयों, त्याग एवं बलिदान से उपार्जित स्वतन्त्रता को भी तब तक स्थायी बनाकर नहीं रखा जा सकेगा जब तक देशवासी स्वयं में राष्ट्रीय चरित्र का विकास न कर लें तथा उन दोषों, दुर्गुणों और बुराइयों से सर्वथा दूर न हो जाएँ जिनके कारण विगत में उन्हें

पराधीन बनना पड़ा था। दयानन्द ने सामाजिक सुदृढ़ता तथा समष्टि के स्वास्थ्य को सुदृढ़ एवं बलवान राष्ट्र का प्रधान कारण माना था।

दयानन्द प्रवर्तित विश्व मानवतावाद - वस्तुतः दयानन्द का क्रान्तिकारी चिन्तन मानवमात्र के हित और कल्याण को लक्ष्य में रखता है। वे वेदों के आधार पर मानव के व्यापक हित की बात करते हैं, जिस वेद ने मनुष्य ही नहीं, प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखने का आदेश दिया, जहाँ सम्पूर्ण विश्व को मानव को विश्राम देने वाला सुखद नीड़ बताया गया है और जहाँ सभी दिशाओं में मैत्री के सूत्र तलाशे गये हैं, उस विश्व संस्कृति का प्रचार ही स्वामी दयानन्द को इष्ट था। दयानन्द की दृष्टि में मानव वह है जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा, निर्बल से भी डरता रहे। दयानन्द की दृष्टि में वेदों की शिक्षा इसी व्यापक मानवता का आख्यान है।

संसार में ऐसे महापुरुषों का अभाव नहीं रहा जिन्होंने मानव जाति के उत्थान के लिए किसी एक क्षेत्र को चुना तथा अपने द्वारा दिये गये कर्तव्यबोध से व्यक्ति तथा समाज की आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति को सिद्ध किया। स्वामी दयानन्द रही कि इसके द्वारा वे समाज में एक साथ बहुआयामी परिवर्तन ला सके।

प्रेषक - श्री हरिदेव रामधनी, आर्य रत्न, महामन्त्री आर्य सभा मोरिशस

आर्य जगत् - सप्ताह रविवार, ०३ मार्च २०१३

PLAINES WILHEMS ARYA ZILA PARISHAD SCHEDULE FOR SHRAVANI YAJ 2013

S/N	NAME OF SAMAJ	DAY	DATE	TIME	PUROHITS/PUROHITAS
1.	Old Moka Road AS/AMS	Fri	02/08	3.30pm	Pta P. Seeruttun, Pt. S. Pelladoa, Pt. J Mahadeo.
		Sat	03/08	3.30 pm	
		Sun	04/08	8.30 am	
		Sun.			Address by Acharya Arya Naresh - 9.30 am
2.	Curepipe Rd AS/AMS Neergheen Bhawan	Fri	02/08	3.30 pm	Pta P Seerattun, Pta A. Hinchoo
		Sat	03/08	3.30 pm	
		Sun	04/08	8.30 am	
		Sun.			Address by Acharya Arya Naresh - 8.30 am
3.	Bassin Rd AS/AMS	Fri	02/08	4.00 pm	Pt. Y. Chooromoney, Pt S. Putteya
		Sat	03/08	4.00 pm	
		Sun	04/08	9.00 am	
4.	Chateaneuf AS	Fri	02/08	06.00 pm	Pt J. Mahadeo, Pt D. Mittoo
5.	Mesnil AS/AMS	Sat	03/08	3.30 pm	Pta Gukool, Pt L. Beekhary
		Sun	04/08	8.00 am	
6.	Solferino AS/ AMS	Sun	04/08	9.00 am	Pt. C Custnea, Pta S Pelladoa, Pt. Khedoo.
7.	Rotin AMS	Fri	02/08	10.00 am	Pta V Hemraj, Pta Nossib
8.	Reunion AS	Sun	04/08	08.00 am	Pt. Seegoolam
9.	Marathi Vedic AS	Sun	04/08	08.30 am	Pt. Cusnea, Pta. Nossib
10.	Stanley AS	Sun	18/08	8.30 am	Pt. B.Chunoo, Pta. Saulick, Pta. Hemraz
11.	Trefles AS/ AMS	Sat	10/08	04.30 pm	(Pt. J. Mahadeo, Pt. Loky, Pt. S. Pelladoa, Pta. Saulick, Pt. D. Mittoo, Pta. V. Hemraj)
		Sun	11/08	08.30 am	
12.	Dhuny Lane AMS	Sun	11/08	03.00 pm	Pta N. Bahorun
13.	Ollier AS	Sun	11/08	08.30 am	Pta Loky, Pt. Mittoo
14.	Clairfonds AS	Sun	11/08	08.30 am	Pt. Khedoo,
					Address by Acharya Arya Naresh
15.	Hermitage AS/AMS	Sat	10/08	04.00 pm	Pt. L. Bheekary, Pt. S Puttya, Pta. N. Bahorun
		Sun	11/08	08.00 am	
16.	Sangram Bhawan AS	Sun	11.08	08.00 am	Pta. Nossib
17.	15, Cantons AS/AMS	Tue	13/08	04.00 pm	Pt. Custnea, Pt. Khedoo
18.	Virjanand AMS	Thurs	15/08	04.00 pm	Pta. S. Pelladoa
		Fri	16/08	04.00 pm	
		Sat	17/08	04.00 pm	
19.	Cherie Lienard AS	Fri	16/08	03.30 pm	Pta Loky, Pta S. Pelladoa, Pt. J Mahadeo
		Sat	17/08	03.30 pm	
		Sun	18/08	08.00 am	
20.	Pailote- Mon Desir AS	Sat	17/08	3.30 pm	Pta. S Pelladoa. Pt. R. Seeraj,
					Pt Custnea, Address by Acharya Arya Naresh at 9.15 on Sunday.
		Sun	18/08	08.00 am	
21.	Vacoas AS	Sun	18/08	04.00 pm	Pt R Seeraj
	Ravindrasingh Gowd <i>President</i>			Sonalall Ramdoss <i>Secretary</i>	Darmaraj Damree <i>Treasurer</i>

Discours de J. J. Ravat à l'occasion de la cérémonie de condoléances pour feu Shri Rajendrachund Mohith et feu Shri Deorishi Boolell OSK, Arya Bhushan, le samedi 20 juillet 2013 à 13h15 au quartier-général de l'« Arya Sabha Mauritius ».

Shri Balchand Tanakoor, PMSM, Arya Bhushan - Président de l'«Arya Sabha Mauritius»

Mr. Raj Sobrun - Manager de l'«Arya Sabha Mauritius»

Mesdames et Messieurs invités, Membres des corps exécutif, législatif, diplomatique et religieux,

Mesdames et Messieurs, Membres du Comité exécutif de l'«Arya Sabha Mauritius»

Mesdames et Messieurs, Membres de l'«Arya Sabha Mauritius» Mesdames, Mesdemoiselles, Messieurs,

Ce n'est un secret pour personne, nous sommes réunis aujourd'hui, en ce lieu si névralgique, si noble, voire si sacré, pour feu Shri Rajendrachund Mohith et feu Shri Deorishi Boolell. En conséquence, ce rassemblement suppose premièrement que nous parlions d'eux.

Les 81 années terrestres de feu Shri Rajendrachund Mohith virent un homme, croyant, pratiquant, citoyen épris de simplicité et de générosité, de persévérance et de persistance qui distillèrent en lui un sens aigu du prochain dont l'engagement au sein de l'Arya Sabha Mauritius était le reflet certain. Tel un Hindou citant la Bible à l'effet « *que ta main droite ne sache pas ce que fait ta main gauche* », il était non pas distrait mais discret, travaillant en coulisses avec diplomatie, dialogue et discernement. Imbu de l'Aryasamajisme, il faisait écho à l'évangile de Jésus-Christ selon St Matthieu (20, 28) étant « *venu pour servir et non pour être servi* ». Mais sachant aussi rendre à César ce qui est à César et à Dieu ce qui est à Dieu, il jonglait avec le respect de la politique et la distance avec les politiciens.

Feu Shri Deorishi Boolell, de son côté, répondit à un appel du père de feu Shri Rajendrachund Mohith, Mohunlall pour venir prêter main forte à un des lieux-clés du pôle des services résidentiels de l'«Arya Sabha Mauritius», c'est-à-dire le Gayasingh Ashram. Porté et transporté par la pensée aryasamajiste qui le faisait transpirer d'espoir, de débrouillardise et de militance, il allait apporter un souffle spirituel et une orientation organisationnelle à cet ashram. Alliant les convictions védiques plurimillénaires et les réalités de la modernité, il faisait transfigurer l'ashram progressivement avec transformation et transparence. Fils du fondateur de Gros Billot Arya Samaj, Sahadeo, il était un père, un grand-père, un parrain, un protecteur dont la compassion, l'écoute et l'assiduité étaient démontrés par les pensionnaires et bénéficiaires actuelles et passées de l'ashram. Également imbu de l'Aryasamajisme, il faisait écho à l'évangile de Jésus-Christ selon St Matthieu (25, 31-46), s'occupant des plus petits qui étaient ses frères, ses sœurs, qui avaient faim, qui avaient soif, qui étaient des étrangers, qui étaient malades – ces plus faibles qui portent le visage de l'exclusion mais qui sont les bénis du Père céleste. Provenant lui-même d'un milieu écrasé, il saura, avec éducation et conviction, comme feu Shri Mohith, gérer avec distance et diligence les ressources les plus sacrées, c'est-à-dire celles destinées aux pauvres et aux plus pauvres.

Rendre visite et rendre service !

Voilà deux expressions que l'on pourrait coller à feu Shri Rajendrachund Mohith et feu Shri Deorishi Boolell. Mais si je viens de leur rendre hommage, bien humblement mais surtout, malheureusement, de façon brève, il s'agit aussi de rendre témoignage de ce qu'ils laissent derrière eux et ainsi de ce qu'ils nous lèguent.

Car le Chrétien pratiquant, Chef de Département à l'Institut Cardinal Jean Margéot, que je suis ne peux pas passer sous silence mon respect pour le type d'Hindous qu'ils ont été et pour l'action qui découle de cet Hindouisme : leur « être » et leur « agir » me confirment dans mon émerveillement pour l'Aryasamajisme qui se veut une redéfinition de la plus ancienne de toutes les grandes religions du monde à partir des Veda et de l'engagement auprès

des pauvres et des misérables ; plonger dans leur vie, c'est se retrouver – justement – nez-à-nez devant l'exceptionnalité, la beauté et la grandeur de ces mêmes Veda, Écritures ultra-sacrées et suprêmes, les textes les plus anciens du patrimoine de l'humanité, Écritures divines parce qu'étant la « *Shruti* », Parole de Dieu. Et quand je vois que prôner un retour aux Rig, Sama, Yajur et Atharva Veda provoque un Aryasamajisme militant, engagé, fier et entraîne un déploiement spectaculaire de projets et de programmes contre la pauvreté et la misère, je ne peux que dire mon appréciation – mieux même, mon admiration, mon estime. Merci donc à feu Shri Rajendrachund Mohith et feu Shri Deorishi Boolell de permettre au Chrétien que je suis et qui puise dans la Bible ma force quotidienne de rencontrer des Hindous qui puisent dans les Veda la puissance cosmique ; commémorer et célébrer votre vie aujourd'hui c'est aussi affirmer que pénétrer l'Hindouisme, le Christianisme, et aussi l'Islam, c'est rencontrer des Hindous, des Chrétiens et des Musulmans qui s'enracinent dans les Veda, la Bible et le Coran pour découvrir à travers et au-delà de ces univers une dynamique autour des pauvres et des misérables. Merci de nous permettre, donc, de nous mettre, pour reprendre l'expression du psychologue américain Dr. Scott Peck, sur le chemin hélas trop peu fréquenté, de l'« *interconnexion* » comme dirait l'extraordinaire Prof. R. Panikkar.

Ainsi, après rendre visite, rendre service, rendre hommage et rendre témoignage, je veux rendre grâce à Dieu, Bhagavan, SatCitananda, Paramatman, Purusa, Nirguna Brahman, Dieu au-delà de tout, Dieu au-dessus de tout. Car la vie de feu Shri Rajendrachund Mohith et feu Shri Deorishi Boolell tournée vers les opprimés et les opprésés, enracinée dans les Veda rendent gloire à Dieu, l'Un, l'Ultime et que je qualifie d'« *Absolu-d'amour* ». Ils n'étaient pas forcément parfaits ou sans erreurs, mais ils étaient humains dont les choix et décisions prouvent ce qu'une vie peut devenir si elle est formée et transformée par Dieu. Terriens, leurs « *atmans* », je suis sûr, sont en train de sortir actuellement de la roue du « *Samsara* » pour atteindre la « *Moksha* ». Telle est en tout cas ma prière.

OM

Mauritius Arya Yuvak Sangh

under the aegis of

Arya Sabha Mauritius

is organizing its

21st National Arya Yuvak Day

&

66th Independence Anniversary of India

on Sunday 18th of August 2013

in collaboration with the

Mahatma Gandhi Institute

as from 2.00 p.m. at the

MGI Auditorium, Moka

Secretary

ARYODAYE

Arya Sabha Mauritius

1, Maharshi Dayanand St,

Port Louis, Tel: 212-2730,

208-7504, Fax : 210-3778,

Email : aryamu@intnet.mu,

www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादक: डॉ० उदय नारायण गंगू,

पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न

सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,

बी.ए., ओ.एस.के., सी.एस.के., आर्य रत्न

सम्पादक मण्डल :

(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, पी.एच.डी.

(२) श्री बालचन्द तानाकूर, पी.एम.एस.एम,

आर्य भूषण

(३) श्री नरेन्द्र घूरा, पी.एम.एस.एम

Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.

Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,

Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

SHRAVANI UPAKARMA : IT'S SPIRITUAL SIGNIFICANCE

Sookraj Bissessur, B.A. Hons

Vedas are the scriptures of true knowledge. It is the first duty of the Aryas to read them, teach them, recite them and hear them being read.

Third Principle of Arya Samaj

Shrāvani Upākarma is one of the most important Vedic festivals. In Mauritius, it is celebrated during the entire month of Shravan.

The origin of most Hindu festivals -- such as Sankranti, Holi, Deepavali, etc. can be traced back to the ancient Vedic period -- when India was the land of Rishis and the Aryas (that is, the noble people). These festivals were eventually instituted by the great rishis -- (seers of yore).

Shrāvani Upākarma, coincides with the monsoon season in 'Aryavarta' (now India). It should be noted that at the very outset of the monsoon -- rainy season, rishis, seers, savants and sages moved towards the villages and the towns, deserting their hermits/dwellings in the forest. Searching and seeking shelter or refuge is being interpreted as a natural urge amongst human beings. To mankind the visits of these saintly people were very beneficial. It should be noted that during the whole month of Shrāvan is devoted to Yajnas, Māhāyajnas, reading and study of the Vedas, and Sermons on Vedic Dharma in Mauritius.

Shravani focalizes on the field of education.

Man's intellect virtually makes of him the living being of the highest order on earth. The power of his brain is fantastic. His mastery of writing, reading and listening contributes immensely to maintain him in the privileged and spiritualized position. In this very context, it goes without saying that Shravani is the festival of reading, listening and reciting the words of wisdom of the Vedas. During ancient days, this festival used to be celebrated during the entire rainy season. The opening ceremony used to be performed on the Purnima day (that is, full moon) in the month of 'Shravan'. Upākarma means resumption. To motivate all people to undertake the serious study of the Vedas is the principal objective of this festival.

Therefore, it is crystal clear to us that in the Vedic age, the Rishis, the yogis, the munis etc who lived in the forest sanctuaries always used to move to the rural and urban areas during the rainy season. On the other hand, owing to heavy inter-

mittent as well as torrential rainfall most people worked only for quite a few hours. Hence, it virtually became a common practice for them to spend their spare time in performing yajnas and mahayajnas, reading, concentrating and scrutinising the holy Vedas -- a quite rare opportunity for all of them to study the scriptures amidst the Rishis.

The Vedas are the Scriptures of all true knowledge.

As revealed by God -- the Vedas -- are recognized as the Supreme Authority of the Vedic Religion. In fact, the books on the Vedic thoughts and concepts (Brahmanas, Upanishads, Smritis, Darshana, the epics Ramayana, Mahabharata and Bhagavad Gita) are truly all man-made and composed by the Rishis. Without any exception, they all wholeheartedly acknowledge the Vedas to be of divine Origin. The term Veda means knowledge. The Vedas are the true books of divine, spiritual and material knowledge, --- that is, science, technology and other branches of knowledge.

The lost heritage has truly been brought to light and life by Maharishi Dayananda Saraswati, the founder of Arya Samaj.

During the long period of ignorance under foreign occupation, the Hindus had also forgotten about the real purpose of the festivals, even the Shravani Upakarma festival was in a complete state of oblivion. The Arya Samaj has revived this festival, which is now being celebrated all over the world by the entire followers of the Vedic Dharma.

It should be also noted that the very importance of this festival is eventually much felt in these days of suffering and toil, and also in the harsh school of life. But even, today most Hindus are quite ignorant and are not conscious about the teachings of the Vedas. The Shravani Upakarma is indeed an opportunity and also an eye-opener to all of us to study the Vedas and the other scriptures or to attend 'satsangs' so as to know more about the science of spirituality. In so doing, little by little, we will be able to acquire the 'Sat-Vidya' -- that is the Right Knowledge as revealed in the Vedas and thus be able to know and understand Dharma.



जो भी व्यक्ति इस महासम्मेलन में भाग लेना चाहें, वे शीघ्र से शीघ्र आर्यसभा के कार्यालय से पत्र या फोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें ।